

VII. समष्टि आर्थिक दृष्टिकोण

समग्र कारोबार दृष्टिकोण के बारे में प्रत्याशाओं के संबंध में अग्रणी सूचना एकत्र करने के लिए रिजर्व बैंक तथा अन्य एजेंसियों द्वारा कराये गये सर्वेक्षण महत्वपूर्ण बदलाव और बढ़ती आशावादिता की ओर इशारा करते हैं, जिसकी पुष्टि अगस्त 2009 तक औद्योगिक उत्पादन में समुत्थान से होती है। तथापि, अपूर्ण मानसून के प्रभाव से कृषि उपज में प्रत्याशित कमी ने समग्र वृद्धि दृष्टिकोण को प्रभावित किया है, जो रिजर्व बैंक के व्यावसायिक पूर्वानुमानकर्ताओं के सर्वेक्षण के उन निष्कर्षों से भी स्पष्ट है, जिसमें वर्ष 2009-10 के लिए वृद्धि संबंधी दृष्टिकोण का अधोमुखी संशोधन करते हुए उसे 6.5 प्रतिशत से 6.0 प्रतिशत पर रखने का सुझाव दिया गया है। अब तक वर्ष-दर-वर्ष डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति के कम होने पर भी मुद्रास्फीति संबंधी दृष्टिकोण आवश्यक वस्तुओं में उभरती ऊँची मुद्रास्फीति और उत्थित एवं विस्तारशील उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति द्वारा प्रभावित हुई है।

VII.1 विविध घरेलू और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के पूर्वानुमान तथा विभिन्न प्रकार के प्रगामी सर्वेक्षण भारत के वृद्धि संबंधी दृष्टिकोण में सुधार की ओर इशारा करते हैं। तथापि, अपूर्ण मानसून का कृषि-उत्पादन और ग्रामीण माँग पर पड़ने वाला प्रभाव द्रुत समुत्थान को रोक सकता है। कारोबारी सर्वेक्षणों में आम तौर पर महत्वपूर्ण आशावादिता का प्रदर्शन होता है जो पिछली तिमाहियों के मंदी के रुझान के विपरीत उल्लेखनीय बदलाव है। रिजर्व बैंक का औद्योगिक दृष्टिकोण सर्वेक्षण यह बताता है कि अर्थव्यवस्था विस्तार के पथ पर लौटेगी। तथापि, रिजर्व बैंक द्वारा सितंबर 2009 में कराये गये व्यावसायिक पूर्वानुमानकर्ताओं के सर्वेक्षण में वृद्धि संबंधी दृष्टिकोण में अधोमुखी संशोधन का संकेत दिया गया है, जो अपूर्ण मानसून के कारण कृषि-उत्पादन पर पड़ सकनेवाले नकारात्मक प्रभाव को प्रतिबिंबित करता है।

कारोबार प्रत्याशा सर्वेक्षण

VII.2 अर्थव्यवस्था की संभावनाओं के बारे में कंपनियों के प्रगामी मूल्यांकन के संबंध में अग्रणी सूचना एकत्र करने के लिए विभिन्न एजेंसियों द्वारा कराये गये सर्वेक्षणों में आशावाद का एक सामान्य पैटर्न प्रदर्शित हुआ है, जिसमें प्रासंगिक कारोबारी विश्वास सूचकांकों ने पूर्ववर्ती तिमाहियों के अपने स्तर से काफी बढ़ोतरी का प्रदर्शन किया है (सारणी 7.1)।

VII.3 एनसीईआर (नैशनल काउंसिल ऑफ एप्लाइड इकॉनामिक रिसर्च) के कारोबारी विश्वास सूचकांक, जिसे जुलाई 2009 में जारी किया गया था, ने पिछली तिमाही के स्तर से 45 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्शायी है, जो उस गिरावट की प्रवृत्ति में बदलाव का द्योतक है, जो पिछली पाँच तिमाहियों में देखी गयी थी। इस सर्वेक्षण ने बीसीआइ के सभी चार घटकों, अर्थात्, 'निवेश वातावरण', 'समग्र आर्थिक स्थिति', 'फर्मों की वित्तीय स्थिति' और 'क्षमता उपयोग', में सुधार दिखलाया। यह सुधार सभी पाँच क्षेत्रों, अर्थात्, उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं, उपभोक्ता गैर टिकाऊ वस्तुओं, पूँजीगत वस्तुओं, मध्यवर्तियों और सेवाओं, में व्यापक आधार वाला था। कारोबारी विश्वास के संबंध में अक्टूबर 2009 का एनसीईआर-मास्टरकार्ड वर्ल्डवाइड इंडेक्स दर्शाता है कि अप्रैल 2009 के स्तर से जुलाई में हुई 45 प्रतिशत की बढ़ोतरी के अतिरिक्त 21 प्रतिशत का और सुधार बीसीआइ में होगा। सर्वेक्षण के निष्कर्षों से

पता चलता है कि कारोबारी रुझान संकट से पहले के स्तरों के निकट पहुँच जायेगा।

VII.4 वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के लिए फिक्की के कारोबारी विश्वास सर्वेक्षण, जिसे सितंबर 2009 में जारी किया गया था, ने यह बताया है कि 70 प्रतिशत कंपनियों ने यह महसूस किया है कि समग्र आर्थिक स्थिति में पिछले छह महीनों की तुलना में "मामूली से पर्याप्त बेहतर" होगी। समग्र कारोबारी विश्वास सूचकांक में पिछली तिमाही के स्तर से 4.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जैसा कि सर्वेक्षण का उत्तर देने वाले 50 प्रतिशत लोगों को उम्मीद थी कि बिक्री का परिमाण बढ़ेगा, 30 प्रतिशत को उम्मीद थी कि निवेश बढ़ेगा, और 22 प्रतिशत यह देखते थे कि ये अगली दो तिमाहियों में श्रम-बल बढ़ायेंगे। उत्तर देने वाले 80 प्रतिशत लोगों ने जहां आर्थिक कार्यकलाप के संबंध में राजकोषीय प्रेरक तत्वों के लाभकारी प्रभाव को पहचाना वहीं कच्चे माल और श्रम-शक्ति की बढ़ती लागत, देर से आया मानसून और ऊँची ब्याज दरों को चिंता के क्षेत्र के रूप में व्यक्त किया।

VII.5 वर्ष 2009 की तीसरी तिमाही के लिए डन एंड ब्रैडस्ट्रीट बिजनेस ऑप्टीमिज्म इंडेक्स, जिसका सर्वेक्षण जून 2009 में कराया गया था, में पिछली तिमाही के सूचकांक के न्यूनतम स्तर से 40.8 प्रतिशत की तेज वृद्धि हुई। छह आशावाद सूचकांकों में से पाँच, यथा, बिक्री का परिमाण, निवल लाभ, नये आदेश, बिक्री-कीमतें, और कर्मचारी स्तर,

सारणी 7.1 : कारोबार प्रत्याशा सर्वेक्षण

अवधि सूचकांक	एनसीईआर ति3:2009 कारोबार प्रत्याशा सूचकांक	फिक्की ति1:2009-10 समग्र कारोबार विश्वास सूचकांक	डन एंड ब्रैडस्ट्रीट ति3: 2009 कारोबार उत्साह सूचकांक
1	2	3	4
सूचकांक का वर्तमान स्तर	118.6	67.2	132.1
पिछले सर्वेक्षण के अनुसार सूचकांक	81.6	64.1	93.8
एक वर्ष पूर्व सूचकांक का स्तर	125.4	52.5	136.5
प्रतिशत परिवर्तन (तिमाही-दर-तिमाही) क्रमिक	45.4	4.8	40.8
प्रतिशत परिवर्तन (वर्ष-दर-वर्ष)	-5.7	28.0	-3.2

में पिछली तिमाही की तुलना में सुधार दर्ज किया गया। तथापि, इन्वेंट्री-स्तर में 2 प्रतिशत अंकों की गिरावट आई।

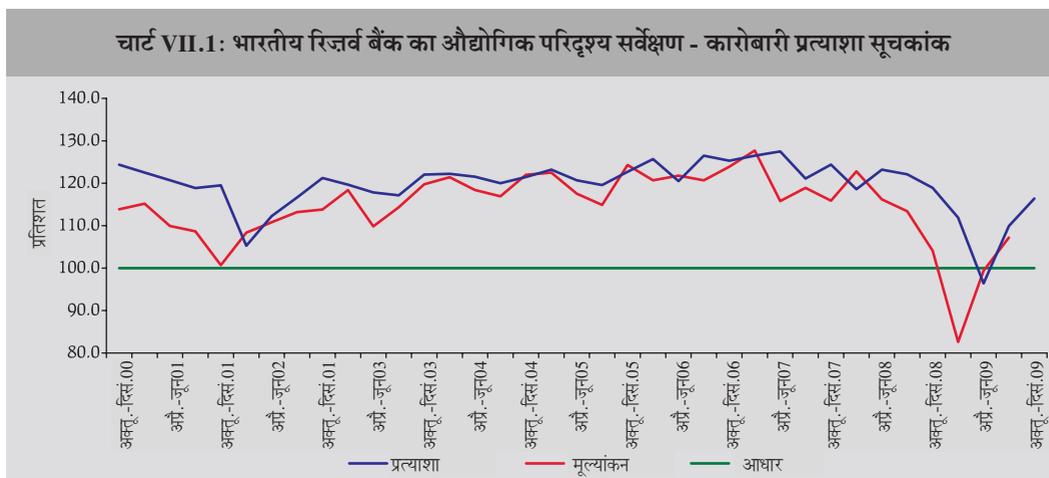
VII.6 एचएसबीसी मार्किट पर्चेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स (पीएमआइ) - जो विनिर्माण क्षेत्र की स्थिति का सांकेतिक माप होता है - अगस्त 2009 में गिरावट के बाद सितंबर 2009 में ऊपर उठा, लेकिन लगातार छह महीनों तक आरंभिक स्तर (अर्थात् 50) से ऊपर बना रहा, जो कार्यकलाप में विस्तार की ओर इंगित करता है। अप्रैल 2009 से विस्तार के चरण में बदलाव अधिकतर गृह-बाजार से प्रेरित रहा है। सेवा-क्षेत्र के लिए पीएमआइ विस्तार-क्षेत्र में बना रहा (अर्थात्, 50 से ऊपर), हालाँकि इसमें सितंबर 2009 में थोड़ी नरमी आयी। सितंबर 2009 में संयुक्त पीएमआइ विस्तार-क्षेत्र में लगभग अपरिवर्तित रहा, क्योंकि विनिर्माण क्षेत्र में सुधार का समंजन सेवा-क्षेत्र द्वारा किया गया।

रिज़र्व बैंक का औद्योगिक दृष्टिकोण सर्वेक्षण

VII.7 जुलाई 2009 में संचालित 47वें दौर के रिज़र्व बैंक के औद्योगिक दृष्टिकोण सर्वेक्षण में पिछली तिमाही के सर्वेक्षण निष्कर्षों में देखे गये बदलाव के बाद विनिर्माण क्षेत्र के रुझान में और भी सुधार दर्शाया गया। इस सर्वेक्षण

में 'जुलाई-सितंबर 2009 के लिए मूल्यांकन' और 'अक्टूबर-दिसंबर 2009 के लिए प्रत्याशाएँ' के संबंध में राय को शामिल किया गया था और दोनों सूचकांक वर्ष 2009 की अंतिम दो तिमाहियों के लिए विकास-क्षेत्र (अर्थात् 100 से ऊपर वह आरंभिक सीमा है, जो संकुचन तथा विस्तार में अंतर करने के लिए आधार है) में बने रहे। इससे पता चलता है कि सर्वेक्षण का उत्तर देने वालों की प्रत्याशा के अनुसार अगस्त 2009 तक आइआइपी की वृद्धि-प्रवृत्ति के रूप में पहले ही देखा गया औद्योगिक समुत्थान वर्ष 2009-10 के दौरान और गतिवान होगा (चार्ट VII.1)। मूल्यांकन (जुलाई-सितंबर) और प्रत्याशाओं (अक्टूबर-दिसंबर) के लिए सूचकांक क्रमशः 107.2 और 116.4 पर पहुँच गये।

VII.8 सर्वेक्षण के निष्कर्ष माँग में सुधर रही स्थिति की ओर भी इंगित करते हैं, जैसा कि आदेश-पुस्तिकाओं, क्षमता उपयोग और उत्पादन की बेहतर प्रत्याशाओं में प्रतिबिंबित होता है। कार्यशील पूँजी वित्त की जरूरत वर्ष 2009 की अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में बढ़ने की उम्मीद है, जो यह बताता है कि निजी क्षेत्र से ऋण की माँग में अब तक हुई निरंतर गिरावट से एक बदलाव दिखाई पड़ सकता है। समग्र सर्वेक्षण प्रत्युत्तर से यह



पता चलता है कि वित्त की उपलब्धता में और सुधार होकर वह आसान हुई है, जो सामान्यतः वित्त की उपलब्धता में सुधार करने के समर्थनकारी मौद्रिक नीति दृष्टिकोण के प्रभाव की पुष्टि करता है। सर्वेक्षण निष्कर्षों में यह भी बताया गया है कि लाभ-मार्जिन पर दबाव जारी रहेगा, हालाँकि वह पिछली तिमाहियों में अनुभव किये गये दबाव से कम होगा। माँग की स्थिति में सुधार होने से निविष्टि-कीमतों में लगातार दूसरी तिमाही में मजबूती बने रहने की उम्मीद है; तथापि, कीमत-निर्धारण शक्ति की क्रमिक वापसी बिक्री के उच्चतर कीमत-निर्धारण को बढ़ावा दे सकती है। सर्वेक्षण के निष्कर्षों के अनुसार रोजगार के दृष्टिकोण में भी सुधार हो रहा है और फर्मों से उम्मीद है कि वे माँग में प्रत्याशित बढ़ोतरी की पृष्ठभूमि में अपने श्रमिक-बल में इजाफा करेंगी (सारणी 7.2)।

VII.9 कारोबारी प्रत्याशाओं में महत्वपूर्ण सुधार को सभी उद्योग समूहों में व्यापक आधार वाला माना जा सकता है, हालाँकि परिवहन, खाद्य-उत्पाद, फार्मास्युटिकल्स और उर्वरक जैसे उद्योग अन्य उद्योगों की तुलना में अधिक आशावादी दिखाई देते हैं। निविष्टि-कीमत मुद्रास्फीति भी सभी स्तरों पर महसूस की जा रही है, लेकिन यह कागज, रबर, वस्त्र और खाद्य उद्योगों के लिए ऊँची है। सभी उद्योगों से, जिनमें वस्त्र उद्योग शामिल नहीं है, से यह उम्मीद है कि वे अपना रोजगार-स्तर बढ़ायेंगे। सभी आकार-समूहों में भी सुधार देखा जा रहा है, लेकिन 1000 करोड़ रुपये या अधिक मूल्य का वार्षिक उत्पादन करने वाली बड़ी कंपनियाँ अधिक आशावादी दिखती हैं।

व्यावसायिक पूर्वानुमानकर्ताओं का सर्वेक्षण¹

VII.10 देर से आये मानसून के प्रभाव के बारे में सामान्य प्रचलित बोध व्यावसायिक पूर्वानुमानकर्ताओं के वृद्धि-

¹ रिजर्व बैंक द्वारा सितंबर 2007 में समाप्त होने वाली तिमाही से प्रारंभ किया गया। पूर्वानुमानों में व्यावसायिक पूर्वानुमानकर्ताओं के विचार प्रतिबिंबित होते हैं न कि रिजर्व बैंक के।

दृष्टिकोण के मूल्यांकन में प्रतिबिंबित होता है। रिजर्व बैंक द्वारा सितंबर 2009 में कराये गये व्यावसायिक पूर्वानुमानकर्ताओं के सर्वेक्षण के नौवें दौर में वर्ष 2009-10 के लिए 6.0 प्रतिशत की समग्र (माध्य) वृद्धि-दर दिखाई गयी है, जबकि इसके पहले के सर्वेक्षण में इसे 6.5 प्रतिशत दिखाया गया था (सारणी 7.3)। क्षेत्रवार वृद्धि दरों के पूर्वानुमान में कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर में अधोमुखी संशोधन करते हुए उसे 2.5 प्रतिशत से (-)1.4 प्रतिशत किया गया, जबकि उद्योग के लिए ऊर्ध्वमुखी संशोधन करते हुए इसे 4.8 प्रतिशत से 6.3 प्रतिशत किया गया। सेवाओं के लिए पूर्वानुमान में पूर्ववर्ती सर्वेक्षण में 8.3 प्रतिशत से वर्तमान सर्वेक्षण में 8.1 प्रतिशत का थोड़ा अधोमुखी संशोधन किया गया है।

VII.11 वर्ष 2009-10 में भारत की वृद्धि के लिए दृष्टिकोण, जैसा कि जून 2009 से विभिन्न संगठनों द्वारा अनुमान लगाया गया है, को या तो ऊर्ध्वमुखी रूप से संशोधित किया गया है या उसे अपरिवर्तित रखा गया है (सारणी 7.4)। एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने सितंबर 2009 में भारत के लिए वृद्धि दृष्टिकोण में ऊर्ध्वमुखी संशोधन करते हुए उसे 5 प्रतिशत से 6 प्रतिशत किया, जो कारोबारी विश्वास में समुत्थान के उभरते संकेतों और राजकोषीय प्रेरक तत्वों, दोनों की भूमिका को आलोकित करता है। जुलाई 2009 में जारी किये गये एनसीएईआर दृष्टिकोण में भी वर्ष 2009-10 के लिए 7.2 प्रतिशत का अनुमानित वृद्धि-आँकड़ा दर्शाया गया, भले ही कृषि क्षेत्र के लिए वृद्धि दृष्टिकोण में अधोमुखी संशोधन करके 2.5 प्रतिशत के पिछले अनुमान से 1.5 प्रतिशत किया गया था। आइएमएफ ने पहले ही अपने जुलाई 2009 के दृष्टिकोण में भारत के लिए अनुमानित वृद्धि को 4.5 प्रतिशत से बढ़ा कर 5.4 प्रतिशत किया था। आइएमएफ के अक्टूबर 2009 के दृष्टिकोण में अनुमानित वृद्धि को वर्ष 2009 के लिए उसी स्तर पर बनाये रखा गया है,

सारणी 7.2 : रिज़र्व बैंक का सर्वेक्षण - औद्योगिक निष्पादन के बारे में अगली तिमाही की प्रत्याशाओं पर निवल प्रतिसाद

मानदंड	प्रतिसाद	जुला-सितं 2008	अक्तू-दिसं 2008	जन-मार्च 2009	अप्रै-जून 2009	जुला-सितं 2009	अक्तू-दिसं 2009	
1	2	4	5	6	7	8	9	
1	कारोबार की समग्र स्थिति	बेहतर	41.8 (42.6)	33.7 (44.1)	21.1 (43.9)	11.2 (47.6)	24.2 (46.7)	39.8 (45.4)
2	वित्तीय स्थिति	बेहतर	32.7 (53.0)	27.7 (52.5)	16.4 (53.2)	8.4 (52.7)	20.0 (54.4)	33.5 (52.5)
3	कार्यशील पूंजी वित्त आवश्यकता	वृद्धि	33.6 (57.3)	33.8 (57.7)	32.9 (57.1)	23.2 (61.0)	26.3 (61.7)	30.4 (61.0)
4	वित्त की उपलब्धता	सुधार	30.2 (57.9)	23.3 (59.0)	13.7 (56.3)	9.3 (61.7)	16.6 (62.6)	26.1 (62.7)
5	उत्पादन	वृद्धि	43.5 (36.6)	39.8 (42.1)	26.0 (42.3)	9.9 (44.9)	22.4 (45.5)	35.0 (43.0)
6	आर्डर बुक	वृद्धि	38.5 (43.5)	35.7 (46.1)	20.6 (46.1)	6.4 (44.4)	16.8 (45.8)	32.3 (45.3)
7	लंबित आदेश, यदि लागू हो	सामान्य से कम	2.2 (80.9)	4.6 (82.0)	11.5 (77.8)	23.2 (59.4)	19.1 (73.4)	11.0 (80.6)
8	कच्चे माल की लागत कच्चे माल का भंडार	कमी	-54.7 (39.1)	-61.1 (32.3)	-35.7 (39.7)	-16.2 (33.7)	-27.1 (55.5)	-38.4 (51.6)
		औसत से कम	-3.8 (81.8)	-7.6 (77.6)	-3.3 (81.3)	1.1 (80.2)	-0.5 (82.7)	-1.2 (85.0)
9	तैयार वस्तुओं का भंडार	औसत से कम	-1.5 (84.5)	-4.3 (82.6)	-4.4 (80.9)	-4.4 (78.4)	-1.8 (80.6)	-3.7 (85.3)
10	क्षमता का उपयोग (मुख्य उत्पाद)	वृद्धि	22.2 (58.8)	26.4 (56.0)	12.3 (59.1)	-0.7 (55.0)	10.7 (57.5)	22.0 (56.2)
11	क्षमता के उपयोग का स्तर (पूर्ववर्ती चार तिमाहियों के औसत की तुलना में)	सामान्य से अधिक	3.6 (74.9)	-0.5 (78.7)	-7.4 (73.7)	-20.8 (66.4)	-12.1 (70.8)	-3.8 (76.0)
12	उत्पादन क्षमता का मूल्यांकन (अगले छह महीनों में अपेक्षित मांग के संदर्भ में)	पर्याप्त से अधिक	4.6 (81.3)	5.7 (81.7)	11.8 (81.0)	8.9 (70.7)	5.5 (76.9)	6.5 (79.7)
13	कंपनी में रोजगार	वृद्धि	15.8 (71.5)	16.6 (70.4)	7.7 (75.7)	-5.1 (74.0)	1.5 (78.6)	8.8 (77.2)
14	निर्यात, यदि लागू हो	वृद्धि	27.7 (54.9)	27.3 (54.3)	16.0 (54.8)	-3.8 (57.3)	0.1 (59.0)	12.5 (58.5)
15	आयात, यदि कोई हो	वृद्धि	21.3 (66.5)	21.4 (67.9)	9.1 (69.7)	-1.4 (68.8)	4.6 (70.6)	11.5 (68.9)
16	बिक्री मूल्य संबंधी अनुमान	वृद्धि	21.0 (61.5)	26.2 (57.6)	4.1 (61.7)	-9.1 (61.9)	0.0 (65.6)	6.0 (67.6)
17	यदि वृद्धि हो तो अनुमानित बिक्री मूल्य	कम दर पर वृद्धि	3.0 (61.3)	0.6 (54.7)	0.9 (54.0)	25.9 (53.5)	-100.0 (0.0)	19.4 (63.2)
18	लाभ मार्जिन	वृद्धि	3.8 (59.8)	-3.6 (54.7)	-12.9 (53.3)	-18.6 (50.6)	-13.4 (54.5)	-2.8 (56.8)

टिप्पणी : 1. 'निवल प्रतिसाद' की गणना 'आशावादी' (सकारात्मक) और 'निराशावादी' (नकारात्मक) सूचना देनेवाली कंपनियों के बीच होनेवाले प्रतिशत अंश अंतर के अनुसार की गई है; यथापूर्व स्थिति (कोई परिवर्तन नहीं) के रूप में दी गई सूचना को हिसाब में नहीं लिया गया है। उच्चतर 'निवल प्रतिसाद' विश्वास के उच्चतर स्तर को और निम्नतर निवल प्रतिसाद विश्वास के निम्नतर स्तर को दर्शाता है।
2. कोष्ठकों के आंकड़े 'पिछली तिमाही की तुलना में परिवर्तन नहीं' उत्तर देनेवाले उत्तरदाताओं के प्रतिशत हैं।

जबकि इसमें घरेलू माँग को प्रोत्साहन देने के लिए नीतिगत प्रेरक तत्वों और अन्य देशों की तुलना में निर्यात पर भारत की आपेक्षिक रूप से कम निर्भरता की भूमिका को आलोकित

किया गया है। प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद ने हाल ही में यह अनुमान लगाया है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में वर्ष 2009-10 में वृद्धि की दर 6.5 प्रतिशत रहेगी

सारणी 7.3: पेशेवर पूर्वानुमानकर्ताओं द्वारा चुनिंदा समष्टि आर्थिक संकेतकों का माध्यिका पूर्वानुमान 2009-10

	वास्तविक 2008-09	वार्षिक पूर्वानुमान				तिमाही पूर्वानुमान									
		2009-10		2010-11		2009-10				2010-11					
		ई	एल	ई	एल	ति2	ति3	ति4	ति1	ति2	ति3	ति4	ति1	ति2	
		ई	एल	ई	एल	ई	एल	ई	एल	ई	एल	ई	एल	ई	एल
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
1. कारक लागत पर वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर (प्रतिशत में)	6.7	6.5	6.0	7.5	7.7	6.2	6.2	6.9	5.7	7.1	6.7	7.5	7.3	-	7.6
क. कृषि और संबद्ध गतिविधियाँ	1.6	2.5	-1.4	3.0	3.7	2.4	-1.0	3.5	-3.7	3.0	-1.0	3.0	2.0	-	2.7
ख. उद्योग	2.6	4.8	6.3	7.4	7.3	3.5	6.6	5.9	6.9	7.2	6.9	7.0	6.7	-	6.7
ग. सेवाएं	9.4	8.3	8.1	9.0	9.1	8.0	7.8	8.5	8.4	8.5	8.6	8.8	8.9	-	9.1
2. सकल देशी बचत (वर्तमान बाजार मूल्य पर जीडीपी का प्रतिशत)	-	35.0	33.6	36.0	36.6	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
3. सकल देशी पूँजी निर्माण (वर्तमान बाजार मूल्य पर जीडीपी का प्रतिशत)	-	36.6	37.3	37.9	37.7	36.4	34.8	38.0	36.5	37.0	36.0	36.2	36.2	-	-
4. करोत्तर कारपोरेट लाभ (वृद्धि दर प्रतिशत में)	-	7.5	10.0	15.0	14.5	3.0	4.5	8.0	9.0	9.0	12.0	15.0	15.0	-	17.5
5. थोक मूल्य सूचकांक	8.4	1.6	3.0	5.5	5.8	-1.4	-0.24#	2.5	4.0	5.4	6.8	5.9	7.2	-	6.5
6. विनिमय दर (अम.डॉ./भा.र. अवधि के अंत में)	51.0	46.5	46.0	44.5	44.5	47.5	48#	47.0	47.0	46.0	46.0	45.4	45.9	-	45.3
7. 91 दिवसीय खजाना बिल प्रतिलाभ (प्रतिशत-अवधि के अंत में)	7.1	4.6	4.1	5.0	4.9	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
8. 10 वर्षीय सरकारी प्रतिभूति प्रतिलाभ (प्रतिशत- अवधि के अंत में)	7.6	7.0	7.3	7.0	7.5	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
9. निर्यात (वृद्धि दर प्रतिशत में)	5.4	-0.5	-5.0	12.0	14.2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
10. आयात (वृद्धि दर प्रतिशत में)	14.3	-3.5	-15.7	14.0	12.0	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
11. व्यापार शेष (बिलियन अमरीकी डालर)	-119.4	-	-	-	-	-25.8	-23.5	-31.0	-28.1	-19.9	-22.1	-29.3	-20.7	-	-28.9

ई: पूर्व का अनुमान

एल: ताजा अनुमान

-: उपलब्ध नहीं

#: वास्तविक

* बीएसई में सूचीबद्ध कंपनियाँ

!: बीओपी आधार पर अम.डॉ.

टिप्पणी: नवीनतम दौर से तात्पर्य सितंबर 2009 को समाप्त तिमाही के लिए नौवें दौर से है, जबकि पूर्व के दौर से तात्पर्य जून 2009 को समाप्त तिमाही के लिए आठवें दौर से है।

स्रोत: सर्वे ऑफ प्रोफेशनल फोरकास्टर्स, दूसरी तिमाही 2009-10।

जिसमें यह आकलन किया गया है कि वृद्धि के 6.25 प्रतिशत से तो कम होने की संभावना नहीं है, लेकिन इसके 6.75 प्रतिशत पर पहुँचने की संभावना है।

वर्तमान वृद्धि और मुद्रास्फीति दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले कारक

VII.12 वर्ष 2009-10 के लिए भारत के वृद्धि संबंधी दृष्टिकोण का वर्तमान मूल्यांकन उभरती बेहतर वृद्धि संभावना और गिरावट की जोखिम पर निर्भर करेगा। वृद्धि

में द्रुत और निरंतर समुत्थान को जो कारक समर्थन करते हैं, उनमें शामिल हैं: (क) नीतिगत प्रेरक तत्वों का प्रभाव, (ख) औद्योगिक समुत्थान के स्पष्ट संकेत, जिसका साक्षी है अप्रैल-अगस्त 2009 के दौरान आइआइपी में 5.8 प्रतिशत की वृद्धि, जिसमें अगस्त में द्वि-अंकीय वृद्धि दर्ज की गयी है, (ग) प्रमुख आधारभूत संरचना क्षेत्र का तगड़ा कार्यसंपादन, जिसमें अप्रैल-अगस्त 2009 में 4.8 प्रतिशत की उच्च वृद्धि हुई, जबकि पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि में यह वृद्धि 3.3 प्रतिशत थी और इसके अतिरिक्त अगस्त

सारणी 7.4: विभिन्न एजेंसियों द्वारा 2009-10 के लिए भारत के वास्तविक सकल देशी उत्पाद का अनुमान

एजेंसी	नवीनतम अनुमान				अनुमान का महीना	पिछला अनुमान	
	समग्र वृद्धि	कृषि	उद्योग	सेवा		समग्र वृद्धि (प्रतिशत)	महीना
1	2	3	4	5	6	7	8
प्रधान मंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद	6.5	-2.0	8.2	8.2	अक्टू.-09	7.0-7.5	Jan-09
अं.मु.कोष (कैलेंडर वर्ष)	5.4	-	-	-	अक्टू.-09	5.4	जुला.-09
आइसीआरआइआईआर	5.8-6.1	-	-	-	अक्टू.-09	6.0	जून-09
एडीबी	6.0	-	-	-	सित्त-09	5.0	मार्च-09
एनसीएईआर	7.2	1.0	6.7	9.4	जुला.-09	6.5-6.9	अप्र-09
ओईसीडी	5.9	-	-	-	जून-09	4.3	मार्च-09
विश्व बैंक	5.1	-	-	-	जून-09	4.0	मार्च-09
दायरा	5.1-7.2					4.0-7.5	

* : आइसीआरआइआईआर

2009 में 7.1 प्रतिशत पर महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गयी, (घ) सेवाओं के अग्रणी संकेतकों में जुलाई-सितंबर 2009 में सुधार, यथा, रेलवे का मालभाड़ा, सीमेंट का उत्पादन/वितरण, इस्पात और वाणिज्यिक वाहनों सहित ऑटोमोबाइल की बिक्री, (ङ) विभिन्न कारोबारी प्रत्याशा सर्वेक्षणों के अनुसार, जिसमें रिजर्व बैंक का औद्योगिक दृष्टिकोण सर्वेक्षण शामिल है, कारोबारी विश्वास में महत्वपूर्ण वृद्धि, (च) वर्ष 2008-09 की दूसरी छमाही में पूँजी के निवल बहिर्वाह के बाद वर्ष 2009-10 की पहली छमाही में पूँजी प्रवाह में पुनरुत्थान, (छ) शेयर बाजार में महत्वपूर्ण समुत्थान (अंत-मार्च 2009 के स्तर से), और वर्ष 2009-10 के पहले पाँच महीनों में पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि की तुलना में सार्वजनिक निर्गमों और प्राइवेट प्लेसमेंट के जरिए संसाधनों का अधिक संग्रह, और (ज) समग्र वैश्विक आर्थिक एवं वित्तीय स्थितियों में सुधार।

VII.13 वृद्धि संभावना को कम करने वाली कई प्रमुख जोखिमों हैं जो इस प्रकार हैं: (क) निजी उपभोग और निवेश माँग की वृद्धि में गिरावट होना, (ख) अपूर्ण मानसून और देश के अनेक हिस्सों में सूखे जैसी स्थिति और कुछ राज्यों में आयी बाढ़ द्वारा खरीफ उत्पादन और ग्रामीण माँग को प्रभावित किया जाना, (ग) वर्ष 2009-10 की

पहली तिमाही में कंपनियों की बिक्री में कमी आना, (घ) क्रेडिट कार्ड और उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं से संबंधित ऋण के ऋणात्मक हो जाने के साथ खाद्येतर ऋण-वृद्धि में गिरावट का बना कहना, जिससे पता चलता है कि वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही में भी निजी उपभोग माँग में गिरावट जारी रह सकती है, (ङ) निर्यात में लगातार 12 महीने तक गिरावट का जारी रहना, (च) बाह्य माँग पर आश्रित सेवा-कार्यकलाप का शिथिल बना रहना, यथा, पर्यटन और बंदरगाहों पर सँभाले गये कार्गो, और (छ) तेल से इतर आयातों में ऋणात्मक वृद्धि और पूँजीगत वस्तुओं के उत्पादन में कमजोर वृद्धि (भले ही इसमें अगस्त 2009 में तेजी आयी), जो शिथिल माँग स्थिति की पुष्टि करती है।

VII.14 दुर्बल समुत्थान और बढ़ी हुई सीपीआइ मुद्रास्फीति के संयोग ने पहले ही नीतिगत चुनौतियों की जटिलताओं को बढ़ा दिया है, भले ही हेडलाइन डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति का स्वरूप अब तक संयत रहा है। मुद्रास्फीति के वैकल्पिक सत्याभासी स्रोतों के बीच, जो निकट भविष्य के मुद्रास्फीति दृष्टिकोण का निर्धारण कर सकता है, वे कारक, जो हेडलाइन मुद्रास्फीति के संभावित दृढ़ीकरण

का समर्थन करते हैं, उन कारकों को स्पष्ट रूप से निष्प्रभ कर देते हैं, जो स्फीतिकारक दबाव को रोकने में मदद कर सकते हैं। मुद्रास्फीति दृष्टिकोण के लिए ये कारक सांत्वना के स्रोत हो सकते हैं : (क) ऋणात्मक उत्पादन अंतराल और दुर्बल समग्र माँग का बना रहना, (ख) पिछले कुछ महीनों से अंतरराष्ट्रीय तेल-कीमतों का अब तक स्थिर रहना, भले ही हाल में अक्टूबर 2009 में उसमें बढ़ोतरी हुई है, (ग) रिज़र्व बैंक के समर्थनकारी मौद्रिक नीति दृष्टिकोण के बावजूद हाल में व्यापक मुद्रा की वृद्धि में थोड़ी गिरावट होना, (घ) कृषि-पण्यों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य में आगे कोई बढ़ोतरी नहीं किया जाना, क्योंकि इससे मुद्रास्फीति की स्थिति निश्चित रूप से खराब हो सकती है, बनिस्बत इसके कि वह सकारात्मक आपूर्ति अनुक्रिया करने में मदद दे, (ङ) खाद्यान्नों के अधिक स्टॉक का कारगर उपयोग, जिसमें वितरण में सुधार पर विशेष ध्यान दिया जाये, ताकि खाद्य पदार्थ की कीमतों को बढ़ने से रोका जा सके, (च) रबी मौसम के दौरान बेहतर फसल होना, जिससे कुछ वस्तुओं की कीमत को कम करने में मदद मिले, जिन्होंने आवश्यक वस्तुओं में मुद्रास्फीति में उत्तरोत्तर वृद्धि की है, और (छ) कुछ वस्तुओं का चयनात्मक आयात, जहाँ अंतरराष्ट्रीय बाजार के साथ वर्तमान कीमत विभेदक अभी भी महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

VII.15 उन कारकों में, जो निकट भविष्य में स्फीतिकारक दबाव को और बढ़ा सकते हैं, खास कर हेडलाइन मुद्रास्फीति के संदर्भ में, शामिल हैं: (क) पिछले वर्ष के आधार प्रभाव का क्षीण होना, जो स्वयं अकेले वर्ष 2009-10 की दूसरी

छमाही में धनात्मक डबालूपीआइ मुद्रास्फीति के रूप में व्यक्त होगा, (ख) पिछले कुछ महीनों से सीपीआइ मुद्रास्फीति का दो अंकों पर दृढ़ बना रहना, (ग) डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति में देखा गया तगड़ा ऊर्ध्वमुखी वेग, क्योंकि सूचकांक में इसके अंत-मार्च 2009 के स्तर से 5.9 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है, भले ही वर्ष-दर-वर्ष मुद्रास्फीति 1.2 प्रतिशत पर कम बनी हुई है, (घ) खाद्य और आवश्यक वस्तुओं में उच्च मुद्रास्फीति, जिसके लिए आपूर्ति को बढ़ाये जाने की जरूरत है, लेकिन इसे अल्पावधि में सुनिश्चित करना कठिन हो सकता है, और विनिर्दिष्ट वस्तुओं के आयात के लिए सीमित विकल्प, (ङ) निरंतर उच्च सीपीआइ मुद्रास्फीति, जो मजदूरी/लागत-वृद्धि मुद्रास्फीति की ओर ले जा सकती है, क्योंकि कीमत-निर्धारण बल की वापसी और मजदूरी के लिए सौदेबाजी के चलते मजदूरी और कीमतों पर संशोधन के लिए दबाव बढ़ेगा। (च) लागतोपरि कीमत-निर्धारण दृष्टिकोण के अंतर्गत न्यूनतम समर्थन मूल्य को और बढ़ाए जाने की जोखिम, (छ) आर्थिक समुत्थान और ईएमई से माँग में अचानक वृद्धि के साथ अंतरराष्ट्रीय पण्य-कीमतों में और मजबूती आ सकना और सबसे महत्वपूर्ण है (ज) उभरते स्फीतिकारक दबावों में आपूर्ति पक्ष की प्रधानता को देखते हुए मुद्रास्फीति संबंधी प्रत्याशाओं को नियंत्रित रखने की नीतिगत चुनौती। इस प्रकार, समग्र आर्थिक दृष्टिकोण का दरोमदार गिरावट की जोखिम के साथ-साथ समुत्थान की बेहतर संभावना तथा उभरते मुद्रास्फीतिकारी दबाव दोनों पर निर्भर है।